International Seminar [Hybrid Mode] on "Integrating Indian Knowledge System with Modern Education: Explore frameworks for incorporating IKS into contemporary curricula, aligning with NEP 2020" 19-20 Dec'2024
With e-ISSN 2394-8426&International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0018

उच्च शिक्षा में व्यावसायिक नैतिकता और मूल्य शिक्षा

Sangeeta Sahu
Assistant Professor
Sandipani Academy Pendri (Masturi)
District Bilaspur Chhattisgarh

सारांश

जीतने की इच्छा, सफल होने की चाह, अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने की ललक– ये वो कुंजियाँ हैं जो व्यक्तिगत उत्कृष्टता के द्वार खोलेंगी। उच्च शिक्षा में विकास की प्रक्रिया में प्रतिमान परिवर्तन ने बदलते परिवेश के साथ प्रभावी रूप से अनुकूलन करने की आवश्यकता पैदा की। परिणामस्वरूप, शिक्षकों ने यह महसूस करना शुरू कर दिया है कि दीर्घकालिक सतत विकास के लिए संस्कृति की आवश्यकता होती हैय उत्कृष्टता की खोज में शिक्षकों को मानवता की ओर उन्मुख होना चाहिए। इसके लिए उद्देश्य और दिशा की गहरी समझ की ओर दृष्टिकोण को पुनः उन्मुख करने की आवश्यकता हो सकती है, जिसका अर्थ है औसत से आगे बढ़कर सर्वश्रेष्ठ बनना। इसका यह भी अर्थ है कि व्यक्ति या संस्थान में उत्कृष्टता के लिए जुनून होना चाहिए। हमारे समाज की नींव ही मांग करती है कि शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच मुख्य अंतर दो ईमानदार इच्छाएँ होनी चाहिएय शिक्षार्थी की बेहतर बनने की इच्छा और शिक्षक की शिक्षार्थी को पहले से बेहतर देखने की इच्छा। उत्कृष्टता की खोज में, उच्च शिक्षा संस्थानों को अपने हितधारकों का ध्यान रखना चाहिए। यानी शिक्षार्थी, शिक्षक, माता–पिता, समुदाय और इसी तरह। उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए जुनून के इर्द–गिर्द घूमने वाले मूल तत्व हैं।**कीवर्ड– व्यावसायिक नैतिकता, मूल्य शिक्षा, उच्च शिक्षा।**

हम सूचना, संचार और मनोरंजन के ष्बर्फ युगष में रह रहे हैं। विशाल तकनीकी परिवर्तनों ने सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन किया है। हम समृद्ध पारंपरिक मूल्यों और नैतिकता को छोड़कर पश्चिमी शिक्षा की ओर अधिकाधिक आकर्षित हो रहे हैं।

व्यावसायिक नैतिकता

'नैतिकता' शब्द लोकाचार या जीवन जीने के तरीके से लिया गया है जो मनुष्य के लिए दार्शनिक अनुशासन है। नैतिकता इस बारे में है कि हम कैसे समझते हैं और सबसे अच्छा चरित्र बनाते हैं और उस समझ के आधार पर हम एक दूसरे के साथ मनुष्य के रूप में कैसे व्यवहार करते हैं। मूल्यशास्त्र के तीन आयामों का उपयोग करते हुए, नैतिकता कानूनी, सामाजिक और नैतिक रूप से सही और गलत को संबोधित करती है। मूल्यशास्त्रीय आदर्श तीनों के बीच एकीकरण है।

इतिहास में नैतिकता को समझने के कई तरीके तैयार किए गए हैं, इन तरीकों से मूल्य मीमांसा के तीन आयामों को लागू करते हुए इन्हें भी तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है।

1. व्यवस्थित कोड (कानूनी, राजनीतिक और वित्तीय आदेश प्रणालियाँ)
2. परिस्थितिजन्य साधन अंत दृष्टिकोण (सामाजिक, सांस्कृतिक मानदंड और परंपराएं)
3. आध्यात्मिक मार्गदर्शक और शिक्षाएँ (धर्म)

सभी समाज किसी न किसी रूप में इनमें से एक या अधिक को अपनाते हैं। सामाजिक व्यवस्था और स्थिरता की नींव स्थापित करने के लिए। मूल्यशास्त्र मूल्य के तार्किक क्रम के अनुसार सभी तीन समूहों को एकीकृत कर सकता है। मूल्य की तार्किक संरचना के अनुसार नैतिकता का क्रम नैतिक समस्याओं और संबंधित मुद्दों के लिए एक बहुत ही नया दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण सकारात्मक और रचनात्मक है। व्यक्तियों और संगठन दोनों के लिए मूल्यों के निर्माण और मूल्य संवर्धन पर जोर देता है। यह फोकस नकारात्मक प्रतिक्रियाशील दृष्टिकोणों की जगह लेता है।

आज मूल्यों और नैतिकता में लोगों की रुचि इतिहास में पहले से कहीं ज्यादा है। मूल्यशास्त्र के अनुसार मूल्यों के विभिन्न सेटों से निपटने के अभ्यास मूल्यों के बारे में बढ़ती जागरूकता और नैतिकता प्रशिक्षण (नैतिकता अच्छे चरित्र) में एक प्रभावी पहला कदम प्रदान कर सकते हैं, मूल्यों/नैतिकता को विकसित करने की प्रक्रिया सांस्कृतिक मूल में निहित है। नैतिकता में इतिहास के सबसे बड़े सबक में से एक– "सभी जीवित चीजें एक उद्देश्य की ओर लक्ष्य बनाती हैं या इस तरह से विकसित होती हैं कि अंतर्निहित क्षमता विकसित हो।" अच्छे चरित्र को विकसित करने के लिए नैतिकता में दिए गए निर्देश का कार्यक्रम स्पष्ट और पालन करने में आसान है।

With e-ISSN 2394-8426&International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0018

1. यह पहचानें कि प्रत्येक व्यक्ति में ऐसी क्षमता होती है जिसे विकसित किया जा सकता है और यह विकास ही सबसे अच्छा चरित्र है। दूसरों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि कुछ लोग अपनी क्षमता का विकास करते हैं और कुछ नहीं करते। इस अंतर को नोट करना शिक्षाप्रद है।
2. उन उत्कृष्टताओं का अनुकरण करें जो दूसरों ने पहले ही विकसित कर ली हैं और उन लोगों का अनुकरण करने से बचें जिन्होंने अपनी क्षमता विकसित नहीं की है।
3. उत्कृष्टता के इस अनुकरण का हर समय और हर संभव तरीके से अभ्यास करें। यह निरंतर अभ्यास अच्छी आदतें और व्यवहार स्थापित करता है।
4. इन आदतों पर चिंतन करें और पुष्टि करें कि आप अपने अंदर की अंतर्निहित क्षमता को विकसित कर रहे हैं, जिससे आप एक बेहतरीन व्यक्ति बन सकते हैं।

मूल्य शिक्षा क्या है?

"मूल्य ही नियम हैं"

"मूल्य उँगलियों के निशान की तरह होते हैं, किसी के भी मूल्य एक जैसे नहीं होते, लेकिन आप जो कुछ भी करते हैं, उसमें वे मूल्य अवश्य ही अंकित होते हैं।" **–एल्विस प्रेस्ली, 20वीं सदी के अमेरिकी सेलिब्रिटी मनोरंजनकर्ता**

"हर व्यक्ति अपने हृदय की गहराइयों से सही काम करना चाहता है, लेकिन सही काम केवल वही कर सकता है जो सही जानता हैय सही वही जानता है जो सही सोचता हैय सही विचार केवल वही करता है जो सही पर विश्वास करता है।"

"मैंने 50 वर्षों में लोगों को वह नहीं सिखाया जो मेरे पिता ने एक सप्ताह में उदाहरण देकर सिखाया।" **–मारियो कुओमो इन टाइम**

मूल्य आधारित शिक्षा पर संसदीय स्थायी समिति (1999) की 81वीं रिपोर्ट में छात्रों में विकसित किये जाने वाले मूल्यों को इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

मूल सार्वभौमिक मूल्य

1. सत्य
2. धर्म–पालन
3. शांति
4. प्रेम
5. अहिंसा
6. सौंदर्य मूल्य

विशिष्ट मान

1. व्यक्तिगत मूल्य
2. सामाजिक मूल्य
3. राष्ट्रीय मूल्य
4. धार्मिक मूल्य
5. मानवीय मूल्य

बहुलवादी समाज के लिए मूल्य आधारित शिक्षा एक प्रमुख चिंता का विषय है। हर समाज में केवल वही चीज शिक्षा के माध्यम से प्रचारित की जाती है जिसका महत्व होता है। फिर भी मूल्य की अवधारणा बनाने का कोई भी प्रयास एक बहुत ही जटिल निर्माण है, शायद मात्रात्मक उपायों की तुलना में गुणात्मक दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त है। मूल्य मानव अनुभव के परिणाम हैं, मूल्यों के व्यक्तिगत और सामूहिक समावेशन का प्रयास इस आधार पर किया जा सकता है कि सुविचारित चयनित "अनुभवों" को फिर से डिजाइन और प्रदान किया जा सकता है। मूल्य किसी के जीवन में एक मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। मनोविज्ञान के क्षेत्र में मूल्य एक लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में एक सेट का रखरखाव है। समाजशास्त्र में यह किसी भी व्यक्ति का किसी भी समाज के सामाजिक शोक, रीति–रिवाजों और शिष्टाचार पर आधारित वांछनीय व्यवहार है।

शिक्षा एक विशाल क्षेत्र है और मूल्य शिक्षा इसके आयामों में से एक है। कुछ विद्वानों के अनुसार मूल्य और शिक्षा दोनों आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं और इसलिए यह कहा जा सकता है कि मूल्य। जिसका अर्थ है कि मूल्य शिक्षा सभी

With e-ISSN 2394-8426&International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0018

शैक्षिक प्रयासों में सहायक और साथ ही अंतिम है। मूल्य बहुत अधिक जटिल हैं जो मूल्य का निर्माण करते हैं जो व्यक्तिगत, परिवार, समूह, समुदाय, जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विभिन्न स्तरों पर हमारे व्यवहार को दिशा देते हैं।

उच्च शिक्षा

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षा एक "मनुष्य निर्माण प्रक्रिया" है। मनुष्य निर्माता शिक्षक हैं जो नैतिक मूल्यों के साथ शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा प्रणाली गुरुकुल शिक्षा से साइबर स्पेस शिक्षा में बदल गई है। पिछले दो दशकों में शिक्षा प्रदान करने और सीखने की प्रक्रिया में एक आदर्श बदलाव देखा गया है।

उच्च शिक्षा बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। उच्च शिक्षा का पहला और सबसे बड़ा उद्देश्य बच्चे के चरित्र का निर्माण करना है। उच्च शिक्षा हमेशा समाज से जुड़ी रही है, इसलिए शिक्षा की अवधारणा को समाज के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मूल्य मौलिक विश्वासों से जुड़े होते हैं।
2. जब हम पढ़ाते हैं तो हम मूल्यों का संचार करते हैं।
3. मूल्य शैक्षिक गतिविधि में व्याप्त हैं।
4. मूल्यों को हमेशा सचेत रूप से नहीं अपनाया जाता।
5. मूल्यों पर आम सहमति की संभावना नहीं है।
6. पहचाने जाने वाले मूल्यों का एक समूह।

अनुसंधान प्रश्न

1. मूल्य शिक्षा सिखाने की रणनीतियाँ क्या हैं?
1. सकारात्मक और नकारात्मक मॉडलिंग विकल्पों में हेरफेररू खेल और सिमुलेशन और भूमिका निभाना।
2. नैतिक दुविधा प्रकरण, जिसमें छोटे समूह में चर्चा होती है तथा अपेक्षाकृत संरचित और तर्कपूर्ण होती है, तथा जरूरी नहीं कि सही उत्तर पर पहुंचा जाए।
3. संरचित तर्कसंगत चर्चा जिसमें तर्कों के साथ–साथ साक्ष्य परीक्षण सिद्धांतों के अनुप्रयोग की आवश्यकता होती हैय समान तरीकों का विश्लेषणय तथा अनुसंधान और बहस।
4. रोल प्लेइंग गेम्स सिमुलेशन, बनावटी या वास्तविक। मूल्यों से भरी परिस्थितियाँ। अभ्यास। गहन आत्म–विश्लेषण संवेदनशीलता गतिविधियाँ। छोटे समूह चर्चाएँ।
5. स्कूल और सामुदायिक अभ्यास के भीतर विश्लेषण और मूल्य स्पष्टीकरण परियोजनाओं के लिए सूचीबद्ध तरीके।
6. समूह आयोजन और पारस्परिक संबंध विकसित करने में कौशल अभ्यास।

मूल्य शिक्षा सिखाने की रणनीतियाँ

1. छात्र के ज्ञान, व्यवहार और भावना पर ध्यान केंद्रित करके संपूर्ण व्यक्ति को शिक्षित करना
2. ऐसी विषय–वस्तु का चयन करना जो आदर्शों में सद्गुणों को सम्मान और पुरस्कृत करे तथा मूल्य विषय–वस्तु पर चिंतन को प्रोत्साहित करे।
3. उद्धरण, प्रतिज्ञा, कोड और दिशानिर्देश का उपयोग करना।
4. सभी छात्रों के लिए उच्च उम्मीदों के साथ स्पष्ट, सुसंगत, ईमानदारी से संवाद करनारू
5. साथियों के दबाव का विरोध करने, आत्म–सम्मान बनाए रखने और अहिंसक तरीकों से विवादों को सुलझाने में छात्रों के कौशल का विकास करना,
6. सकारात्मक व्यक्तिगत उदाहरण के माध्यम से एक अच्छा रोल मॉडल बनना।
7. सम्मानजनक भाषा का प्रयोग करना और उसकी अपेक्षा करना।
8. मूल मूल्यों (करुणा, साहस, शिष्टाचार, निष्पक्षता, ईमानदारी, दयालुता, वफादारी) को पढ़ाने के लिए कक्षा के नियमों के वातन और निष्पक्ष प्रवर्तन का उपयोग करना।
9. दृढ़ता, सम्मान और जिम्मेदारी, प्रशंसा और सराहना के साथ छात्रों के परिश्रमी कार्य और अच्छे व्यवहार को सुदृढ़ करना, अनैतिक, अनैतिक और अपमानजनक व्यवहार को सुधारना या सक्षम बननाय
10. छात्रों को सहपाठियों के साथ विषम समूहों में सहयोगात्मक रूप से एक साथ काम करने के लिए प्रेरित करना,
11. माता–पिता और समुदाय द्वारा छात्रों को सामुदायिक सेवा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करनारू तथा उपदेश न देकर शिक्षा देना

चिंतन के लिए बिंदु

With e-ISSN 2394-8426&International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0018

1. स्कूल में मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में जो कुछ भी हो रहा है, उसे सामान्य रूप से लिया जाना चाहिए और इस पर स्पष्ट रूप से चर्चा नहीं की जानी चाहिए। समाज में होने वाले परिवर्तनों और संवाद करने की बढ़ती क्षमता के संदर्भ में यह अब पर्याप्त नहीं हो सकता है।
2. विद्यार्थियों तक संदेश पहुंचाना इसके अलावा, इस बात पर बहस उठाना महत्वपूर्ण है कि मूल्यों और मूल्यों की समझ को व्यक्तियों द्वारा कैसे विकसित किया जाता है।
3. दृष्टिकोण की व्यापकता स्कूल का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को सीखने में सक्षम बनाना है।इसलिए स्टाफ उन मूल्यों पर जोर देता है जो कक्षा या स्कूल के सदस्य के रूप में सफलतापूर्वक संचालन करने के लिए आवश्यक हैं, स्कूल के बाहर जीवन के लिए प्रासंगिक मूल्यों तक पहुंचें?
4. विद्यार्थी जो सीखते हैं वह हमेशा शिक्षक द्वारा सिखाई गई बातों के अनुरूप नहीं होता है। विद्यार्थी छिपे हुए पाठ्यक्रम के माध्यम से मूल्य सीखते हैं और स्टाफ को किसी भी छिपे हुए संदेश के लिए अपने अभ्यास की पुनः जांच करनी चाहिए।
5. स्कूल और समुदाय जबकि स्कूल की बच्चों की शिक्षा के सभी पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका होती हैय सभी इस बात पर सहमत थे कि छोटे बच्चों के मूल्यों का विकास माता–पिता और स्कूलों के बीच साझेदारी पर निर्भर करता है। इससे यह महत्वपूर्ण सवाल उठता है कि माता–पिता, माता–पिता और शिक्षक समूह और स्कूल मूल्यों की शिक्षा के लिए स्कूल की नीति और प्रथाओं को विकसित करने में कैसे सहयोग कर सकते हैं।

मूल्य शिक्षा के लिए दृष्टिकोण

1. **मूल्यों की शिक्षा–** मूल्य शिक्षा मूल्यों औरध्या महत्व देने के बारे में सिखाने का एक स्पष्ट प्रयास है। मूल्य शिक्षा के पाँच बुनियादी दृष्टिकोण हैंय संस्कार, नैतिक विकास, विश्लेषण, मूल्य स्पष्टीकरण और क्रियात्मक शिक्षा।
2. **संस्कार–** मूल्यों की शिक्षा को आत्मसात करने के दृष्टिकोण से देखने वाले अधिकांश शिक्षक मूल्यों को सामाजिक या सांस्कृतिक रूप से स्वीकृत मानकों या व्यवहार के नियमों के रूप में देखते हैं। इसलिए मूल्यांकन को छात्र द्वारा समाज के भीतर महत्वपूर्ण व्यक्तियों और संस्थानों के मानकों या मानदंडों को पहचानने और स्वीकार करने की प्रक्रिया माना जाता है। छात्र इन मूल्यों को अपने मूल्य प्रणाली में ष्शामिलष करता है। शिक्षक मानव स्वभाव का एक दृष्टिकोण लेते हैं जिसमें व्यक्ति को, आत्मसात करने की प्रक्रिया के दौरान, एक आरंभकर्ता के बजाय एक प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में माना जाता है। चरम और यहां तक कि व्यक्तियों की जरूरतों और लक्ष्यों को परिभाषित करते हैं। हालांकि, जो लोग किसी व्यक्ति को समाज में एक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर भागीदार मानते हैं, वे मूल्यों को विशेष रूप से सीखने की स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा, न्याय और आत्म–अन्वेषण जैसे मूल्यों को विकसित करने की कोशिश करते हैं। सामाजिक और व्यक्तिवादी दोनों ही इस धारणा पर बहस करेंगे कि कुछ मूल्य सार्वभौमिक और निरपेक्ष हैं। इन मूल्यों का स्रोत कोई नहीं है। इस पर बहस हो सकती है। एक ओर कुछ अधिवक्ताओं का तर्क है कि वे ब्रह्मांड की प्राकृतिक व्यवस्था से मूल्य प्राप्त करते हैंय जबकि अन्य का मानना है कि मूल्यों की उत्पत्ति एक सर्वशक्तिमान निर्माता से होती है।
3. **नैतिक विकास–** नैतिक विकास के दृष्टिकोण को अपनाने वाले शिक्षकों का मानना है कि नैतिक सोच एक विशिष्ट अनुक्रम के माध्यम से चरणों में होती है। यह दृष्टिकोण मुख्य रूप से लॉरेंस कोहलबर्ग के 6 चरणों और 25 "बुनियादी नैतिक अवधारणाओं के दृष्टिकोण पर आधारित है, जो मुख्य रूप से नैतिक मूल्यों, जैसे निष्पक्षता, न्याय, समानता और मानवीय गरिमा पर केंद्रित हैय अन्य प्रकार के मूल्यों (सामाजिक, व्यक्तिगत और सौंदर्य) पर आमतौर पर विचार नहीं किया जाता है।यह माना जाता है कि छात्र नैतिक मुद्दों के बारे में अपनी सोच में हमेशा विकासात्मक रूप से प्रगति करते हैं। वे अपने वर्तमान प्राथमिक चरण से एक चरण ऊपर समझ सकते हैं और नैतिक विकास को बढ़ाने के लिए अगले उच्च स्तर के संपर्क में आना आवश्यक है। शिक्षक छात्रों को अनुक्रमिक चरणों के माध्यम से अधिक जटिल नैतिक तर्क पैटर्न विकसित करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करते हैं।

कोहलबर्ग का मानव स्वभाव के बारे में दृष्टिकोण पियागेट, एरिकसन और लोविंगर एट अल जैसे अन्य विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों के विचारों में प्रस्तुत किए गए दृष्टिकोण के समान है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को पर्यावरण के भीतर एक सक्रिय आरंभकर्ता और एक प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में देखता है, लेकिन पर्यावरण व्यक्ति को पूरी तरह से ढाल नहीं सकता है। किसी व्यक्ति के कार्य उसकी भावनाओं, विचारों, व्यवहार और अनुभवों का परिणाम होते हैं, यह उसके स्वरूप को निर्धारित नहीं कर सकता है। व्यक्ति के अंदर पहले से मौजूद आनुवंशिक संरचनाएं मुख्य रूप से उस तरीके के लिए जिम्मेदार होती हैं जिसमें व्यक्ति सामग्री को आंतरिक रूप से ग्रहण करता है, और इसे व्यक्तिगत रूप से सार्थक डेटा में व्यवस्थित और रूपांतरित करता है। नैतिक विकास तकनीक का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है, एक काल्पनिक

With e-ISSN 2394-8426&International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0018

या तथ्यात्मक मूल्य दुविधा कहानी प्रस्तुत करना, जिस पर फिर छोटे समूहों में चर्चा की जाती है। छात्रों को इन चर्चाओं के भीतर वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए जाते हैं, जिसके बारे में परिकल्पना की जाती है कि यह उच्चतर, अधिक विकसित नैतिक सोच की ओर ले जाता है। कक्षा में नैतिक चर्चा आयोजित करने का एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, मूल्य शिक्षा के प्रत्येक दृष्टिकोण में मानव प्रकृति के साथ–साथ उद्देश्य, प्रक्रियाओं और दृष्टिकोण में उपयोग की जाने वाली विधियों का एक दृष्टिकोण है। उदाहरण के लिए, अंतर्ग्रहण दृष्टिकोण में मानव प्रकृति के बारे में एक बुनियादी दृष्टिकोण है, जो एक प्रतिक्रियाशील दृष्टिकोण है, दूसरी ओर, मानव प्रकृति को सक्रिय और प्रतिक्रियाशील के बीच आगे–पीछे जाता हुआ देखता है, जबकि क्रिया सीखने के दृष्टिकोण मानव प्रकृति को अंतःक्रियात्मक रूप में देखते हैं। निम्न तालिका प्रत्येक दृष्टिकोण के लिए सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं की रूपरेखा प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अधिकारी, जी.एस. और अधिकारी, एस. (1987) "कुमाउनी क्षेत्र में स्कूली लड़के और लड़कियों के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक समूहों में मूल्यों का अध्ययन, "जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल एजुकेशन, 19(5-6) पृ. 12-15.
2. आनंद भूषण (1977), "किशोरों के दृष्टिकोण पर धर्मनिरपेक्ष और धर्मनिरपेक्ष स्कूलों का चित्रण, शिक्षा में खोज, XIV(3) पृ. 17-22
3. अन्नाम्मा, ए.डी. (1984) केरल में कॉलेज के छात्रों की आकांक्षाएं और समायोजन पीएच.डी.मनोविज्ञान केरल विश्वविद्यालय
4. अशोक कुमार और दर्शन आनंद (1982)। "विज्ञान और वाणिज्य स्नातकों के मूल्य पैटर्न का तुलनात्मक अध्ययन।" जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, खंड 7 (3), पृ.287-280
5. नटेसन ए.के. जतिहा बेगुन.ए., श्रीदेवी.एस., (2010), "शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता संबंधी चिंताएँ"– ए.पी.एच प्रकाशन निगम– 80-349
6. राजा एम.आर.एच. और फूज–येंग, (2008), चिंतनशील सीखने के लिए एक उपकरण के रूप में वेबलॉग का उपयोग करना। जर्नल ऑफ स्कूल एजुकेशन वॉल्यूम 3: नंबर 3: 26-37.